(10) (a) Quality (b) possession and (c) performance (a) PART-I, PAPER-

(C) Remaining Part Social stratification

Quality से तात्पर्य वैसे गुणों से है जो व्यक्ति को जन्म से प्राप्त होता है जैसे जातीय पदस्थिति। Performance से तात्पर्य वैसे गुणों से है जो व्यक्ति अपने प्रयासों से प्राप्त करता है और Possession से तात्पर्य उन वस्तुओं से है जो कि एक व्यक्ति के पास है चाहे वह धनसम्पत्ति हो या सुन्दरता या कला-कौशल। Parsons के अनुसार उपर्युक्त तीनों आधारों को सामाजिक स्तरीकरण निर्धारण में किस ढंग से लागू किया जायेगा यह उस समाज के मान्य उद्देश्यों, आदर्शों तथा मूल्यों पर निर्भर करता है जैसे धर्म पर आधारित समाजों में धर्म से संबंधित व्यवहार, कुशलताओं का अधिक महत्व होगा। जबकि औद्योगिक समाजों में इसका महत्व नहीं के बराबर होगा। इसी तरह उपर्युक्त तीनों आधारों का मूल्यांकन समाज के केन्द्रीय मूल्य प्रतिमानों के अनुसार किया जाता है। पारसन्स के अनुसार केन्द्रीय मूल्य प्रतिमानों को चार श्रेणियों में बाँटा गया है

1) प्रतिमान स्थिरता एवं तनाव को दूर करना (Latency)
2) लक्ष्य की प्राप्ति (Goal attainment)
3) अनुकूलन और (Adaptation)
4) एकीकरण (Integration)

इन्हें संक्षेप में AGIL भी कहते हैं।

ऊपर की चर्चाओं से स्पष्ट है कि प्रकार्यवादियों ने सामाजिक स्तरीकरण का आधार केवल आर्थिक व्यवस्था को स्वीकार नहीं किया है बल्कि इसके अलावे सामाजिक सांस्कृतिक कारकों की भी चर्चा की है। लेकिन इस सिद्धान्त की भी आलोचना की गयी है। आलोचकों में टॉनीज, बोटोमोर, टुमीन आदि प्रमुख हैं। टुमीन ने इस सिद्धान्त की मान्यताओं को स्वीकार नहीं किया है। इसके अनुसार 'यह कहना गलत है कि मानव समाज हमेशा बँटा रहा है और बँटा रहेगा। इसके अनुसार मानव समाज का आरम्भिक स्वरूप संस्तरित नहीं था। वे यह भी स्वीकार नहीं करते हैं कि निर्णय लेनेवाले पद समाज के लिये सबसे आवश्यक होते हैं और न ही यह स्वीकार करते हैं कि

जो लोग सबसे ऊँचे पद पर होते हैं वे सबसे योग्य होते हैं।

संभवतः उन्होंने इस बात की सबसे अधिक आलोचना की है कि ऊँचे पदों के लिये अधिक प्रशिक्षण की जरूरत होती है। Davis ने उदाहरण Doctor का दिया, जवाब में Tumin ने उदाहरण शिल्प पर आधारित शिल्पकारों का दिया है जिनके प्रशिक्षण में काफी लम्बा समय लगता है फिर भी समाज में उनकी पदस्थिति काफी निम्न है। Tumin का यह भी कहना है कि समाज में क्षमता योग्य व्यक्तियों का पता लगाना कठिन होता है खासकर वैसे समाजों में जो कठोरबद्ध सीमाओं में बँटा हुआ है।

आलोचकों का यह भी कहना है कि यह कोई आवश्यक नहीं है कि संस्तरण हमेशा अनिवार्य रूप से प्रकार्यात्मक ही हो बल्कि वे अकार्यात्मक भी हो सकते हैं जैसे सामाजिक स्तरीकरण कुछ वर्ग को ऐसे राजनीतिक अवसर प्रदान करती है जिससे वे वर्तमान स्थिति को बनाये रखने में समर्थ होते हैं। अतः इन समाजों में रूढ़ीवादी प्रभावों को अनिवार्यतः प्रोत्साहन मिलता है जबकि वंचित वर्ग में ईर्ष्या, द्वेष या जलन उत्पन्न होता है। बॉटोमोर ने इस सिद्धान्त की आलोचना में कहा है कि यह सिद्धान्त स्तरीकरण को सार्वभौमिक मानता है परन्तु वास्तविक अध्ययनों से यह पता चलता है कि यह मान्यता गलत है। सरल समाज में अनेक पद एक दूसरे से पृथक् थे और वहाँ सामाजिक स्तरीकरण नहीं था।

उपरोक्त चर्चाओं से स्पष्ट है कि स्तरीकरण का कोई भी सिद्धान्त आलोचनाओं से मुक्त नहीं है। Karl Marx, Max Weber, Kingsley Davis एवं Wilbert Moore सभी के सिद्धान्तों को विभिन्न आधारों पर आलोचना की गयी है फिर भी यह कहा जा सकता है कि ये विभिन्न सिद्धान्त सामाजिक स्तरीकरण को समझने की नयी सीख देते हैं।

Marriage among different ethnic groups.
(भारत के विभिन्न समुदायो मे विवाह) Paper-II

मुस्लिम विवाह:-

विवाह एक सार्वभौमिक संस्था है। परंतु वैवाहिक नियम एवं विवाह के उद्देश्य विभिन्न समाजो मे अलग अलग देखने को मिलते है। मुस्लिम विवाह जिसे निकाह कहा जाता है हिन्दुओ के विवाह की भाँति पवित्र संस्कार ना हो कर एक सामाजिक समझौता माना जाता है। दरअसल, मुस्लिम विवाह शरीयत के नियमो पर आधारित है। जैसा कि हम जानते है कि मुस्लिम समाज शिया, सुन्नी दो समूहो में विभाजित है, किन्तु सुन्नी कारण ही भारत में सामान्यतः लागू होता है, शिया समुदाय की संख्या बहुत ही कम है।

रोनाल्ड विल्सन के अनुसार मुस्लिम विवाह यौन समागम को वैधानिक बनाना और बच्चो को जन्म देना मात्र है। एस. सी. सरकार का भी मानना है कि मुसलमानो में विवाह पवित्र संस्कार नहीं है, बल्कि एक विशुद्ध सामाजिक समझौता है। लेकिन मुस्लिम विवाह का यह चित्र सही नही है। मुस्लिम समाज मे विवाह एक धार्मिक कर्तव्य भी है। यह श्रद्धा तथा इबादत की एक क्रिया है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि जो मुसलमान इस कार्य को एक धार्मिक क्रिया मान कर करता है उसे परलोक मे पुरस्कार मिलता है और जो ऐसा नही करता वह पाप का भागीदार आवश्यक रूप से एक होता है। जंग ने स्पष्ट शब्दो मे कहा है कि निकाह आवश्यक रूप से एक समझौता है, किन्तु साथ ही यह श्रद्धा का भी कार्य है।

मुस्लिम विवाह की प्रथम आवश्यकता है, प्रस्ताव रखना और उसकी स्वीकृति यद्यपि ये दोनो बाते हिन्दू विवाह मे भी पायी जाती है, पर हिन्दुओ मे प्रस्ताव एवं स्वीकृति जहाँ माता पिता के स्तर पर होती है, वही मुस्लिम विवाह में लड़की की स्वीकृति आवश्यक है। लड़का दो गवाहो तथा मौलवी की उपस्थिति मे लड़की के सामने विवाह प्रस्ताव रखता है और लड़की की रजामंदी के बाद से प्रस्ताव की स्वीकृति मिलती है। अतः विवाह समझौता दो गवाहो द्वारा प्रमाणित किया जाता है। ये दोनो गवाह मुस्लिम पुरुष होते है। गैर मुस्लिम गवाह का कोई महत्व नही है।

मुस्लिम विवाह का दूसरा लक्षण यह है कि व्यक्ति मे विवाह समझौता करने की योगयता होनी चाहिए, क्योकि केवल वयस्क और समझदार व्यक्ति ही समझौता को समझ सकता है। दूसरे शब्दो मे, बाल विवाह मुसलमानो मे अमान्य है। मुस्लिम विवाह का तीसरा लक्षण यह है कि यह समानता के सिद्धान्त पर आधारित है। यद्यपि निम्न स्तर के व्यक्ति के साथ विवाह संविदा करने का कोई कानूनी निषेध नही है, फिर भी इस प्रकार के विवाह को हेय दृष्टि से देखा जाता है। भागकर किए गए विवाह जिसे 'किपुर' कहते है, मान्य नही है। मुस्लिम विवाह का चौथा लक्षण है अधिमान्य व्यवस्था जीवन साथी के चुनाव में पहली अधिमान्यता सलिंग सहोदरज को और उसके बाद विलिंग सहोदरज को दी जाती है। यद्यपि दोनो प्रकार के सहोदरज विवाह को मान्यता प्राप्त है पर कुपु के

मुस्लिम विवाह की प्रथम आवश्यकता है, प्रस्ताव रखना और उसकी स्वीकृति यद्यपि मे दोनो बाते हिन्दू विवाह मे भी पायी जाती है, पर हिन्दुओ मे प्रस्ताव एवं स्वीकृति जहाँ माता पिता के स्तर पर होती है, वही मुस्लिम विवाह में लड़की की स्वीकृति आवश्यक है। लड़का दो गवाहो तथा मौलवी की उपस्थिति मे लड़की के सामने विवाह प्रस्ताव रखता है और लड़की की रजामंदी के बाद से प्रस्ताव की स्वीकृति मिलती है। अतः विवाह समझौता दो गवाहो द्वारा प्रमाणित किया जाता है। ये दोनो गवाह मुस्लिम पुरुष होते है। गैर मुस्लिम गवाह का कोई महत्व नही है।

मुस्लिम विवाह का दूसरा लक्षण यह है कि व्यक्ति मे विवाह समझौता करने की योगयता होनी चाहिए, क्योकि केवल वयस्क और समझदार व्यक्ति ही समझौता को समझ सकता है। दूसरे शब्दो मे, बाल विवाह मुसलमानो मे अमान्य है। मुस्लिम विवाह का तीसरा लक्षण यह है कि यह समानता के सिद्धान्त पर आधारित है। यद्यपि निम्न स्तर के व्यक्ति के साथ विवाह संविदा करने का कोई कानूनी निषेध नही है, फिर भी इस प्रकार के विवाह को हेय दृष्टि से देखा जाता है। भागकर किए गए विवाह जिसे 'किपुर' कहते है, मान्य नही है। मुस्लिम विवाह का चौथा लक्षण है अधिमान्य व्यवस्था जीवन साथी के चुनाव में पहली अधिमान्यता सहोदरज को और इसके बाद विलिंग सहोदरज को दी जाती है। यद्यपि दोनो प्रकार के सहोदरज विवाह को मान्यता प्राप्त है पर कुपु के

नियमो का पालन अवश्य किया जाता है।

मुस्लिम विवाह में मेहर का बहुत अधिक महत्व है। मेहर वह धन है जो विवाह के प्रतिफल के रूप मे पत्नी अपने पति से लेने का अधिकार रखती है, मुस्लिम नियमो के अंतर्गत मेहर पति पर एक कर्तव्य है जो कि पत्नी के प्रति आदर का सूचक होता है। इस तरह यह वधू मूल्य नही है। इसके मुख्य उद्देश्य है - पति पर पत्नी को तलाक देने संबंधी नियंत्रण रखना तथा पति की मृत्यु अथवा तलाक के बाद पत्नी को अपने भरण - पोषण के योग्य बनाना मेहर की धनराशि विवाह से पहले बाद मे या फिर विवाह के समय निश्चित की जाती है। मेहर की राशी लड़की की सुन्दरता एव गुण, उसकी पारिवारिक पृष्ट भूमि आदि के आधार पर तय की जाती है मेहर का संबध सहवास से है, क्योकि बिना मेहर की राशि तय किए पति - पत्नी से सहवास की अधिकारी नही बनता है।

मेहर की कई तरह के होते है। जैसे :-

(i) निर्दिष्ट मेहर :- दोनो पक्षो द्वारा तय की गयी राशी होती है।

(ii) उचित मेहर :- जब मेहर की राशि तय न कर के जो मुनासिब समझा जाता है वह दे दिया जाता है, तो उसे उचित मेहर कहते है।

(iii) तुरंत मेहर :- माँगे जाने पर दी जाने वाली मेहर की राशी को तुरंत मेहर (फोरी) भी कहते है।

(iv) स्थगित मेहर :- जो मेहर तलाक के बाद दिया जाता है उसे स्थगित मेहर कहते है।

Sociology Hons.

B. A. Part 1

Paper 1

(6)

Ques: → Defined culture and discuss the element of culture.
Or, What is culture? Analyse the element of culture.

Ans: → संस्कृति समाजशास्त्र की खोज में विशेष महत्व रखती है और शुरु से ही समाज शास्त्रीयों ने संस्कृति का अध्ययन विशेष रूप से किया है। जहाँ तक संस्कृतिक अवधारणा का सम्बन्ध है। विचारों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इस क्षेत्र में मतभेद पाया जाता है और दो ढंग से संस्कृतिक की व्याख्या की गई है। कुछ विचारकों ने संस्कृति में केवल अभौतिक वस्तुएं सम्मिलित किए हैं और कुछ विचारकों ने भौतिक तथा अभौतिक दोनों प्रकार की वस्तुएं संस्कृतिक का अंग स्वीकार किया है। पहले के मत को Sociological concept तथा दूसरे प्रकार के concept को Anthropological concept कहते हैं। Tylor, Redfield, Gillin, Kroeber, इत्यादि विचारकों ने समाजशास्त्री (Sociological) व्याख्या का समर्थन किया है। जबकि Pidington, Kidney तथा Ogburn आदि ने Anthropological concept की व्याख्या दी।

सब से पहले नियमित रूप से संस्कृति की अवधारणा देते हुए Tylor ने यह व्याख्या दी की "Culture is the complex whole which includes knowledge, belief, art, moral, law, custom, and other capabilities aquired by man as a member of society" उक्त परिभाषा से यह स्पष्ट है कि मानव समाज और समूह में रहकर योग्यताएँ प्राप्त करता है वह संस्कृति में सम्मिलित होती है। यह भी स्पष्ट है कि यह सभी योग्यताएं अभौतिक होती हैं। इसलिए यह कहा जा सकता है कि Tylor ने समाज शास्त्रीय अवधारणा का समर्थन किया है। इसी प्रकार Redfield ने यह विचार दिया है — "Culture is a body of beliefs and convention understanding manifest in art and artifact, which persisting through tradition characterises a human group" इस परिभाषा से यह

अभौतिक वस्तुओं
स्पष्ट होता है कि Redfield ने भी केवल अभौतिक वस्तुओं को भी सम्मिलित किया कि विश्वास हो या convention under standing दोनों ही अभौतिक होती हैं। इस प्रकार Gillin को यह विचार किया कि Culture is not activity rather Patterning of activity या Ideas. Clouck kohn का यह विचार किया कि "Culture is the same Total ways of behaviour" इस बातों को स्पष्ट करता है कि व्यवहार की ढंग और तरीके संस्कृति को स्पष्ट करते हैं। व्यवहार के यह ढंग और तरीके subjective होते हैं।

दूसरी ओर Pidington ने मानवशास्त्री अवधारणा का समर्थन करते हुए भौतिक और अभौतिक वस्तुओं को संस्कृति में सम्मिलित की। उसके अनुसार "the Culture of a people may be define as the sum total of the material and intellectual equipment whereby the satisfy their Biological and Social needs and adapt themselves to their Environment."
इस परिभाषा के अनुसार भौतिक तथा अभौतिक दोनों ही प्रकार की वस्तुएं संस्कृति में सम्मिलित हैं और यह भी स्पष्ट है कि यह सभी वस्तुएं चाहे भौतिक वस्तु के रूप में हो चाहे मानसिक प्रक्रिया के रूप में मानव के द्वारा बनाए जाते हैं। इस प्रकार Bidney ने यह विचार किया कि संस्कृति में Agrifact, Artifact, Socifact तथा Mentifact सम्मिलित होते हैं। Agrifact कृषि उत्पादन तथा Artifact उद्योगी उत्पादन भौतिक होते हैं। जबकि Social fact (Product of Society) तथा mentifact (Product of mind) अभौतिक होते हैं।

ऊपर की व्याख्याओं से यह स्पष्ट है कि चाहे संस्कृती की समाजशास्त्रीय अवधारणा हो या मानव शास्त्रीय अवधारणा हो प्रत्येक परिभाषा में संस्कृती को एक Complex whole बताया गया है और अनेक इकाइयों को इसमें सम्मीलीत किया गया है इस प्रकार संस्कृती की अनेक

Scanned with CamScanner

आशं की चर्चा की गई। कुछ विचारकों ने केवल अभौतिक आशं का विवरण दिया है जब कि कुछ विचारकों ने भौतिक तथा अभौतिक दोनों ही प्रकार के आशं की चर्चा की है Anderson तथा Parker के अनुसार "All Socrety have a Culture, That is a Pattern while Consisting of the material and non-material Substance that give them desires for opretive." इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि अनेक प्रकार की भौतिक और अभौतिक इकाई संस्कृती का अशं होती है और इन्ही अशं के आधार पर elements of culture, Culture complex तथा Culture Patterns की चर्चा की गई।

Anderson तथा Parker ने ही Culture traits तथा culture elements की चर्चा करते हुए यह विचार दिया कि "Culture traits are the single elements or smallest units of a Culture System we recognised for purposes of analysis." इस परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि संस्कृती में जो सबसे छोटी इकाइयां होती हैं उन्हे ही संस्कृती का तत्व कहा जाता है और उन्हे ही Culture traits कहा जाता है यह element या तत्व या तो वस्तु के रूप में हो सकते है या व्यवहार के रूप में, अनेक प्रकार के व्यवहार और अनेक प्रकार की वस्तुए जो Complex whole में सम्मीलित होती है और संस्कृती की इकाई बनती है उन्हे elements of culture कहा जाता है इन्ही element या Traits के मिलने से संस्कृती का complex whole बनता है

Jacobe तथा Stern ने इस सम्बन्ध में विचार देते हुए यह व्याख्या दी है कि "Culture elements or traits may be defined of those invented and transmited units of culture which for particular purpose of discription and

theoritical treatment need not be subjected to further subdivision." परिभाषा इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि culture के elements संस्कृती के वह इकाईयाँ होती है जिनका समाज ही अविष्कार होता है या जो समाज मे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक learning Process के द्वारा आती है यही इकाईयाँ Traits of culture भी कहलाती है इसके साथ-2 यह भी स्पष्ट है कि संस्कृती के यह तत्व ऐसी इकाईयाँ होते है जिन्हे आगे विभाजीत करने की कोई अवश्यकता नही होती। जिस प्रकार किसी पदार्थ की सबसे छोटी इकाई जो उसके गुणों को स्पष्ट करती है उसी प्रकार संस्कृती की वह छोटी इकाई जो वास्तव मे पाई जाती है और जिसका Transmission होता है element of culture कहलाती है। इस बात का समर्थन करते हुए Hobel ने यह विचार दिया कि "A culture element is a pattern of behaviour or the material Product of such behaviour that may be treated as the smallest unit its order."

इस व्यवस्था के आधार पर यह कहा जा सकता है कि संस्कृती की वह सबसे छोटी इकाई जो मानव व्यवहार के रूप मे यह पाई जाती है। Element of culture कहलाती है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि जैसे एक दीवार की सबसे छोटी इकाई ईंट होती है। और ईंट के मिलने से दिवार बनती है। इस प्रकार संस्कृती के तत्व भी इसके इकाई होते है और इन्ही के मिलने से Culture order बनता है।

Hobel की व्याख्या से यह भी स्पष्ट होता है कि Element of culture मे मानव व्यवहारो के ढंग और व्यवहार के Product दोनो ही सम्मीलीत होते है अर्थात व्यवहार स्वयं Element of culture नही होता बल्कि ~~behavior~~ behaviour of pattern को Element of Culture कहा जा सकता है

Scanned with CamScanner

अर्थात किसी समाज में Folkways पाये जाते हैं वे behaviour Pattern को स्पष्ट करते हैं इसलिए इन जनरीतियों को संस्कृती की इकाई कहा जा सकता है इसी प्रकार किसी समाज में प्रार्थना के ढंग, विवाह के ढंग एवं ईश्वर को निमंत्रित करने का Pattern आदि Element of culture की स्पष्ट करते तो दूसरी ओर मानव व्यवहार के Product भी संस्कृती के तत्व में शामिल है अर्थात जो भौतिक वस्तुएं मानव निर्मित होती हैं वह भी संस्कृती का अंश कहलाती है Example के लिए परम्परा पर आधारित भारतीय समाज में बैलगाड़ी एक element of culture थी इसी प्रकार आधुनिक समाज में Refrigter तथा T.V को Element of Culture कहा जाता है सकता है

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि भौतिक और अभौतिक दोनों ही प्रकार की इकाइयां Element of Culture हो सकती हैं।

The end